2

कुलुस्सियों के लिए पौलुस का धन्यवाद

कुलुस्सियों 1:3-8

सलाम के बाद पौलुस ने कुलुस्सियों को बताया कि वह उनके विश्वास, प्रेम और आशा के कारण धन्यवाद सहित उनके लिए प्रार्थना करता है। सुसमाचार की सच्चाई को जानने के बाद वे यीशु के लिए फल लाने लगे थे और फल लाते जा रहे थे। मसीह के लिए पौलुस के प्रिय सहकर्मी इपफ्रास ने उन्हें सिखाया था और प्रेम की उनकी सेवा के बारे में बताया था।

जिन बातों के लिए पौलुस धन्यवादी था, वे आयतें 4 से 8 में बताई गई हैं। उसने अपने पत्रों में सलाम का आरम्भ विशेष रूप में प्रशंसा और धन्यवाद के साथ करते हुए उन खूबियों या कामों की बात की, जिनकी वह सराहना कर सकता था। कई बार इनके बाद पाठकों के सुधार के लिए समझाना डांट और निर्देश होते थे।

धन्यवाद की एक प्रार्थना (1:3)

[3]हम तुम्हारे लिए नित प्रार्थना करके अपने प्रभु यीशु मसीह के पिता अर्थात परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं।

''हम परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं'' (1:3)

हम पौलुस और तीमुथियुस के लिए हो सकता है या अन्य पत्रों में पौलुस द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाला सम्पादकीय ''हम'' हो सकता है (1 कुरिन्थियों। 2:6, 7; 2 कुरिन्थियों 4:1, 2)। पत्र में ''मैं'' के उसके इस्तेमाल (उदाहरण के लिए कुलुस्सियों 1:23, 24, 25, 29; 2:1, 5) से संकेत मिलता है कि कुलुस्सियों को लिखने वाला व्यक्ति तीमुथियुस नहीं बल्कि पौलुस था। ''मुझ पौलुस का अपने हाथ से लिखा हुआ नमस्कार'' (कुलुस्सियों 4:18) स्पष्ट दिखाता है कि वही इस पत्र का लेखक था।

कुलुस्सियों के लिए पौलुस की प्रार्थना उनकी ओर से आशिषों के लिए केवल याचना और विनती नहीं थी। उसकी प्रार्थना में आभार और धन्यवाद भी था।

धन्यवाद (*eucharisteō*) अपने सम्भावित पाठकों के सम्बन्ध में पौलुस के चार पत्रों में छोड़कर सब में है (गलातियों, 2 कुरिन्थियों, 1 तीमुथियुस और तीतुस)।[1] यह इस बात का संकेत हो सकता है कि पौलुस ने केवल तभी धन्यवाद व्यक्त किया जब उसे लगा कि ऐसी भावनाएं होनी आवश्यक हैं। पौलुस ने कुलुस्सियों को बताया कि उसके और तीमुथियुस के मनों में उनके सम्बन्ध में परमेश्वर से बात करते हुए आभार की बात की। पौलुस के मन में धन्यवाद इपफ्रास से मिली उनकी अच्छी खबर के कारण था (कुलुस्सियों 1:7, 8)। मसीह के लिए सेवा के प्रति

उसके समर्पण से अपने साथी मसीही लोगों के जीवनों के आनन्द करने या दुखी होने पर उनके साथ मिल जाता था (2 कुरिन्थियों 7:7, 8; 1 थिस्सलुनीकियों 3:9)। उसका आभार **परमेश्वर** के सामने सही था, क्योंकि सब आत्मिक आशिषों का देने वाला वही है (इफिसियों 1:3) और उसी ने कुलुस्सियों को आशीष दी थी।

''अपने प्रभु यीशु मसीह के पिता'' (1:3)

पौलुस ने परमेश्वर के साथ यीशु के सम्बन्ध के वर्णन के लिए ''पिता'' शब्द का इस्तेमाल किया (रोमियों 15:6; 2 कुरिन्थियों 1:3; 11:31)। यीशु परमेश्वर को ''मेरा पिता'' कहता था (उदाहरण के लिए देखें मत्ती 7:21; 10:32, 33; लूका 10:22; 24:49)। उसने मरियम मगदलीनी को बताया था कि वह ''अपने पिता'' और ''अपने परमेश्वर'' के पास ऊपर जा रहा है (यूहन्ना 20:17)।

अपने प्रभु यीशु मसीह के पिता को पिता द्वारा दिए गए जन्म के परिणामस्वरूप यीशु को पुत्र बनाकर, जैविक मूल के अर्थ में नहीं समझा जाना चाहिए। पौलुस द्वारा ''पिता'' का इस्तेमाल पुराने नियम के विचार को दर्शाता है। परमेश्वर कहता है, ''और मैं तुम्हारा पिता हूंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियां होंगे'' (2 कुरिन्थियों 6:18; देखें 2 शमूएल 7:14; 1 इतिहास 17:13)। भजन संहिता 2:7 को दोहराते हुए इब्रानियों 1:5 इस विचार को यीशु पर लागू करता है।

''अपने प्रभु यीशु मसीह के पिता'' शब्दों में सम्बन्ध को दर्शाया गया है न कि आरम्भ को। एक अर्थ में यीशु को परमेश्वर का पुत्र कहा गया है, क्योंकि उसकी शारीरिक देह पवित्र आत्मा की छाया करके मरियम को गर्भवती करने का परिणाम था (मत्ती 1:18; लूका 1:35, 36)। इस प्रकार उसका शारीरिक जन्म हुआ परन्तु उसका अस्तित्व इस जन्म से पहले था। वह आदि में (यूहन्ना 1:1) यानी संसार की सृष्टि से भी पहले (यूहन्ना 17:5) पिता के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा सृजा गया (यूहन्ना 1:3, 10; कुलुस्सियों 1:16)। यीशु का अनादि, ईश्वरीय, आत्मा के स्वभाव का जन्म नहीं हुआ था। वह अनादिकाल से था (मीका 5:2)।

यीशु को पिता के साथ अपनी संगति के कारण ''परमेश्वर का पुत्र'' कहा जाता है। ऐसी शब्दावली से पिता के साथ यीशु के निकट, करुणामय प्रेम सम्बन्ध का पता चलता है (यूहन्ना 15:9)। इस अवधारणा को कि ''परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रकट किया'' (यूहन्ना 1:18) शब्दों में व्यक्त किया जाता है।

''यीशु मसीह के पिता'' का हवाला इस बात का संकेत है कि वे दो अलग-अलग जीव हैं। पिता और पुत्र अर्थात यीशु एक है (यूहन्ना 10:30) परन्तु वे वही नहीं हैं। पुत्र न्याय करेगा परन्तु पिता न्याय नहीं करेगा (यूहन्ना 5:22)। पिता को मालूम है कि यीशु कब लौटेगा, परन्तु पुत्र ने कहा कि उसे नहीं मालूम (मरकुस 13:32)। यीशु अब केवल एक अर्थात पिता को छोड़ जिसने सब कुछ उसके अधीन किया, हर किसी के ऊपर है (1 कुरिन्थियों 15:27, 28)।

पिता और पुत्र के बीच की एकता वह एकता है जो केवल आत्मिक जीवों के बीच हो सकती है। शारीरिक जीव सचमुच में एक नहीं हो सकते, क्योंकि शारीरिक देहें बिल्कुल अलग रहेंगी। आत्मिक जीवों की बनावट मनुष्य जाति को ज्ञात नहीं है। इस कारण हम यह नहीं समझ सकते कि वे किस प्रकार से एक तो हैं पर फिर भी विलक्षण रूप में अलग हैं। शारीरिक जीव

एक-दूसरे के बीच नहीं हो सकते, परन्तु यीशु पिता में है और पिता यीशु में है: ''पिता मुझ में है, और मैं पिता में हूं'' (यूहन्ना 10:38); ''मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है'' (यूहन्ना 14:10, 11, 20)। वे एक हैं (यूहन्ना 10:30), परन्तु फिर भी दो हैं (यूहन्ना 8:17, 18) क्योंकि वे आत्माएं हैं न कि शारीरिक जीव।

''पिता'' में आदर और स्वेच्छा से आज्ञा मानने का विचार पाया जाता है (इब्रानियों 5:8; फिलिप्पियों 2:8)। यह सम्बन्ध एक प्रौढ़ पुत्र का अपने पिता के साथ है, जिसमें दोनों बराबर हैं। मसीह ने इस बराबरी के कुछ पहलुओं को थोड़ी देर के लिए छोड़ा था जब उसने मनुष्यजाति का सेवक बनने के लिए मनुष्य जाति का स्वभाव पहन लिया था (फिलिप्पियों 2:6, 7)।

पुत्र का वही स्वभाव है जो पिता का है। यदि पिता परमेश्वर है तो पुत्र भी परमेश्वर ही होगा और परमेश्वर के बराबर होगा। यहूदियों ने यही निष्कर्ष निकालकर यीशु पर सताव किया था, जब उसने परमेश्वर को अपना पिता कहा था। उन्हें इस बात की समझ थी कि परमेश्वर को अपना पिता कहकर वह ''अपने आप को परमेश्वर के तुल्य ठहराता था'' (यूहन्ना 5:18)।

''अपने प्रभु'' का अर्थ यह नहीं है कि मसीह केवल *हमारा* प्रभु है यानी वह केवल मसीही लोगों का प्रभु है। वह स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु है (मत्ती 28:18)। परन्तु एक और सीमित अर्थ में यीशु केवल मसीही लोगों का अर्थात उन का प्रभु है जो उसे अपने प्रभु के रूप में मानते और किसी दूसरे प्रभु की सेवा नहीं करते। वह उनका प्रभु है (1 कुरिन्थियों 8:6)। व्यवहार में हो सकता है कि यह हर बार सही न हो, परन्तु उद्देश्य में उनका लक्ष्य यही है। जो लोग उसके अनुयायी नहीं हैं वे अपने प्रभु के रूप में उसका आदर नहीं करते हैं या अपने जीवनों के प्रभु के रूप में उसे स्वीकार नहीं करते हैं।

''प्रभु'' (*kurios*) का अर्थ जो सर्वोच्च, श्रेष्ठ और शासक है। राजा अग्रिप्पा को प्रेरितों 25:26 में यही कहकर सम्बोधित किया गया था। कुछ मामलों में ''प्रभु'' केवल आदर दिखाने के लिए हो सकता है; उदाहरण के लिए दास के ऊपर स्वामी के लिए इसका इस्तेमाल हो सकता है (मत्ती 18:25-34)। नये नियम में इसका इस्तेमाल आम तौर पर परमेश्वर पिता के लिए हुआ है (मत्ती 11:25), परन्तु अधिकतर पुत्र यीशु मसीह के लिए ही हुआ है (यूहन्ना 13:14; 1 कुरिन्थियों 8:6)।

''तुम्हारे लिए नित प्रार्थना करके'' (1:3)

न केवल पौलुस ने प्रार्थना करनी जारी रखी बल्कि उसने दूसरों को भी निरन्तर प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित किया (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)। **नित प्रार्थना करके** और ''निरन्तर'' अपने इस्तेमाल के द्वारा पौलुस के कहने का अर्थ कभी न रुकने के अर्थ में लगातार या बिना रुके नहीं था।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम देखते हैं कि पौलुस ने प्रार्थना के महत्व पर बड़ा ज़ोर दिया। हम पढ़ते हैं कि वह यीशु को देखने के बाद (9:11), ऐल्डरों को नियुक्त करने से पहले (14:23) और फिलिप्पी में जेल में रहते समय प्रार्थना कर रहा था। उसने भाइयों से विदा लेने से पहले उनके साथ प्रार्थना की (20:36; 21:5)। जब वह मन्दिर में होता था (22:17) और पुबलियुस के पिता को चंगाई देने से पहले (28:8) उसने प्रार्थना की। वह न केवल मसीही

लोगों के लिए[2] बल्कि गैर-मसीही लोगों के लिए भी प्रार्थना करता था।

यह सुनकर कि पौलुस उनके लिए प्रार्थना कर रहा था, कुलुस्से के लोगों को बड़ा प्रोत्साहन मिला होगा। उसके नमूने का पालन करते हुए मसीही लोगों को उनके लिए जो मसीह में हैं धन्यवाद सहित प्रार्थना करते रहना चाहिए।

उनका विश्वास और प्रेम (1:4)

[4]क्योंकि हम ने सुना है, कि मसीह यीशु पर तुम्हारा विश्वास है, और सब पवित्र लोगों से प्रेम रखते हो।

''क्योंकि हम ने सुना है कि मसीह यीशु पर तुम्हारा विश्वास है'' (1:4)

अनुवादित क्रिया रूप **सुना** (*akousantes*) नये नियम में बार-बार मिलता है। यूनानी भाषा में यह अनिश्चित भूतकाल कृदंत है और आयत 3 में ''हम धन्यवाद करते हैं'' क्रिया का मातहत है।[3] ''सुना'' की क्रिया धन्यवाद देने से पहले हुई थी। यही यूनानी संरचना मरकुस 16:16 में मिलती है, जहां ''विश्वास करे'' और ''बपतिस्मा ले'' भी अनिश्चित भूतकाल कृदंत हैं, जिसका अर्थ है कि वे ''उद्धार होगा'' की मुख्य क्रिया के कार्य से पहले आना चाहिए।

पौलुस और तीमुथियुस को कुलुस्से के लोगों के जीवनों का पता इपफ्रास और शायद अन्य लोगों की बातों से चला था। विभिन्न कलीसियाओं से सम्बन्धित पौलुस को मिली खबरों में अच्छा आचरण, बुरा व्यवहार और मण्डलियों की शिक्षाएं और झूठी बातें थीं। कई बार उसने बताया कि उसे ये बातें कहां से पता चली हैं, जैसे कुरिन्थियों के बारे में उसे खलोए के घराने से पता चला था (1 कुरिन्थियों 1:11)। आत्मा भी मण्डलियों के बीच की परिस्थिति के सम्बन्ध में उसे जानकारी प्रकट कर देता था (1 कुरिन्थियों 5:3; कुलुस्सियों 2:5)। अन्य समयों में उसने केवल इतना कहा कि उसे पता चला है पर उसने यह नहीं बताया कि उसे कहां से पता चला है (1 कुरिन्थियों 5:1; 1 थिस्सलुनीकियों 1:9)।

पौलुस आम तौर पर कलीसियाओं से मिली रिपोर्टों का उत्तर देता था। फिलिप्पियों में पौलुस ने मिलकर न चलने वाले यूओदिया और सुन्तुखे का नाम लिया, यह ऐसी समस्या थी जिसे सुधारा जाना आवश्यक था (फिलिप्पियों 4:2)। हुमनियुस और फिलेतुस का उल्लेख 2 तीमुथियुस 2:16-18 में है जिनसे सावधान रहना आवश्यक था। देमास जिसने पौलुस को छोड़ दिया था, का नाम 2 तीमुथियुस 4:10 में दिया गया है। उनकी ओर ध्यान दिलाने का पौलुस का उद्देश्य उन दो स्त्रियों की सहायता करना था, जिनमें झगड़ा था, झूठी शिक्षा देने वाले दो लोगों से चौकस करना और एक भाई के बारे में बताना था, जो विश्वास को छोड़ गया था।

याकूब ने लिखा कि हम ''एक-दूसरे की बदनामी'' न करें (याकूब 4:11) या ''एक-दूसरे पर दोष'' न लगाएं (याकूब 5:9)। क्या मसीही लोगों के गलत जीवन और कलीसियाओं की खबरें केवल गप हैं? दूसरों के मामले में बिना कारण टांग अड़ाने की बात अर्थात गप का उल्लेख अन्य बुराइयों के साथ इसे गलत ठहराते हुए किया गया है (रोमियों 1:29; 2 कुरिन्थियों 12:20; 1 तीमुथियुस 5:13; 2 तीमुथियुस 3:3; तीतुस 2:3)। लोगों के बारे में ऐसी बातें करना किसी

समस्या को सुलझाने के लिए दूसरों में भरोसा करने या किसी समस्या पर चर्चा करने से अलग है।

पौलुस को कुलुस्से के भाइयों और बहनों के सम्बन्ध में जो पता चलता था वह अच्छी बात थी। अन्य लोग उनके विश्वास की बातें कर रहे थे, उस विश्वास की, जिसने उन्हें मसीह के वफ़ादार लोग बना दिया था। वे मत्ती 5:14ख में यीशु द्वारा बताए गए लोगों की तरह थे ''जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है, वह छिप नहीं सकता।'' हर मसीही का लक्ष्य इस प्रकार से रहना होना चाहिए जिससे दूसरों को उसके बारे में सुनकर अपने विश्वास में प्रोत्साहन मिले।

आयतें 4 और 5 में पौलुस ने एक पसंदीदा त्रिपदी ''विश्वास,'' ''प्रेम,'' और ''आशा'' जोड़ दी। नये नियम के लेखकों ने आम तौर पर इन्हें इकट्ठे रखा है।[4] जे. बी. लाइटफुट ने इन तीन शब्दों के पौलुस के जोड़ को इस प्रकार संक्षिप्त किया है:

> हम *विश्वास* की बातों के लिए जो तुम्हें मसीह यीशु में हैं, और *प्रेम* जो तुम परमेश्वर के सब लोगों के प्रति दिखाते हो, जबकि उस *आशा* के लिए जिसकी तुम राह देखते हो जो आने वाले जीवन के लिए भण्डार के रूप में स्वर्ग में तुम्हारे लिए रखी गई है, धन्यवाद से भरे हैं।[5]

लगता है कि टीकाकार इस पृष्ठभूमि में **मसीह यीशु पर विश्वास** के अर्थ के साथ भिड़ते हैं। विचार की निम्न भिन्नताओं पर ध्यान दें। पहले हर्बट एम. कार्सन ने लिखा है:

> ''इस संदर्भ में मसीह यीशु पर वाक्यांश का अर्थ यह नहीं है कि उनके विश्वास की बात मसीह है, बेशक यह सही है, क्योंकि तब eis या epis उपसर्गों की आवश्यकता होगी। इसके विपरीत यह पौलुस का उपयोग है जिसे हम आयत 2 में पहले भी देख चुके हैं। वे मसीह में उस से उनका जीवन लेने के अर्थ में हैं ... इस कारण जो विश्वास वे दिखाते हैं कि उसे शक्ति उन के मसीह के साथ जुड़े होने से मिलती है। उस विश्वास का अभ्यास उसके साथ उन के मिलन से संचालित होता है।''[6]

लाइटफुट ने इस निष्कर्ष के साथ सहमति जताई:

> यहां और समानान्तर वचन इफिसियों 1:15 में उपसर्ग *en* उस दायरे का संकेत देता है जिसमें उस कारक के विपरीत जिसके लिए है उनका विश्वास ढूंढ़ता है (तुलना 1 कुरिन्थियों 3:5); क्योंकि यदि यहां अर्थ कारक है तो स्वाभाविक उपसर्क *epi* या *eis* होना था (उदाहरण के लिए 2:5)।[7]

एफ़. एफ़. ब्रूस का इससे थोड़ा अलग विचार था:

> ''मसीह यीशु'' यहां सजीव वातावरण में जिसके अन्दर-अन्दर उनका विश्वास दिखाया जाता है उनके विश्वास के कारक के रूप में उतना नहीं देखा जाता प्रतीत होता; यानी जिस विश्वास की प्रेरित बात करता है वह वह विश्वास है जो पुरुषों और स्त्रियों के रूप में उनका है जो मसीह यीशु में है।[8]

ए. टी. रॉबर्टसन ने यह कहते हुए एक और आयाम जोड़ दिया, ''उनका विश्वास मसीह यीशु के दायरे में चलता था'' (2 तीमुथियुस 1:13)। यह ईमानदारी से बढ़कर है यह मसीह में आंतरिक भरोसा है। ...''[9]

संक्षेप में ''मसीह यीशु पर'' का इस्तेमाल पौलुस द्वारा आम तौर पर मसीही लोगों के उस सम्बन्ध के वर्णन के लिए किया गया, जो यीशु के साथ उनका था। इस वाक्यांश से उनके उसके साथ निकट सम्बन्ध और उन आशिषों का सुझाव मिलता है जिन्हें वह देता है। इस वचन में पौलुस के कहने का अर्थ हो सकता है वह विश्वास न हो जो उनका मसीह में था। उसने कर्मवाची सम्बन्धकारक का इस्तेमाल नहीं किया, जिसका अर्थ मसीह का विश्वास है। उस वाक्य रचना के साथ विश्वास की बात कारक के रूप में मसीह पर रखा विश्वास होनी थी। इसके बजाय उसके कहने का अर्थ था कि कुलुस्से के लोग जो मसीह में थे अपने विश्वास पर काम कर रहे थे। उसने उनके विश्वास के बारे में सुना था, उस विश्वास के बारे में जो उन लोगों के मनों में होता है जो मसीह में हैं। इसके लिए वह धन्यवादित था (आयत 3)।

''और सब पवित्र लोगों से प्रेम रखते हो'' (1:4)

पौलुस ने पहले कुलुस्सियों के विश्वास की और फिर उनके प्रेम की बात की। विश्वास वह आधार है जिस पर सभी मसीही गुण आधारित हैं (2 पतरस 1:5-7)। सच्चा विश्वास समान विश्वास वाले लोगों को प्रेम की ओर ले जाता है। यीशु के अनुयायियों को एक-दूसरे से अलग करने के बजाय विश्वास हमें अपने साथी मसीही लोगों से प्रेम में पहुंचा देता है।

प्रेम सीमित नहीं है, क्योंकि इसमें **सब पवित्र लोगों को** शामिल किया गया है। यह कलीसिया के भीतर विशेष समूह नहीं बनाता है। जिस प्रेम का आरम्भ यीशु ने किया वह जाति, राष्ट्रीयता, सामाजिक स्थिति और सैक्स और व्यक्तित्व के पार पहुंच जाता है। संसार के लिए परमेश्वर का प्रेम (यूहन्ना 3:16) मानवीय पृष्ठभूमियों के कारण अन्तर नहीं करता है। परमेश्वर का प्रेम किसी व्यक्ति के प्रेम के योग्य होने पर उतना आधारित नहीं है जितना परमेश्वर के प्रेम होने का (रोमियों 5:7, 8; 1 यूहन्ना 4:8)। मसीही लोगों को उसी प्रकार प्रेम करना आवश्यक है। हमें दूसरों से प्रेम करना आवश्यक है चाहे दूसरे लोग प्रेम के योग्य हों या न। इस प्रकार के प्रेम के द्वारा हम दिखाते हैं कि हम मसीही हैं, यीशु के सच्चे अनुयायी (यूहन्ना 13:35)।

पौलुस कुलुस्से के लोगों के मसीही प्रेम के लिए धन्यवादी था। मसीही गुणों में सबसे बड़ा ''प्रेम'' (*agapē*) है। प्रेम विश्वास और आशा से भी बड़ा है (1 कुरिन्थियों13:13)। यीशु ने कहा कि प्रेम से ही दूसरों को उसके अनुयायियों की पहचान पता चलती है। पौलुस और पतरस ने लिखा कि मसीही जीवन में सबसे बढ़कर प्रेम को जोड़ा जाए (कुलुस्सियों 3:14; 1 पतरस 4:8)। सबसे बड़ी प्राप्ति के रूप में पतरस ने प्रेम को मसीही विकास के लिए सबसे ऊपर रखा (2 पतरस 1:7)।

''सब पवित्र लोगों'' वाक्यांश में पौलुस यह संकेत नहीं दे रहा था कि कुलुस्से के लोग सारे संसार के ''सब पवित्र लोगों'' को जानते और उन से प्रेम रखते थे। उसके कहने का अर्थ यही होगा कि कुलुस्से के पवित्र लोग और विश्वासी भाई उन ''सब'' पवित्र लोगों से प्रेम रखते थे जिनके बारे में उन्होंने सुना था या जिन्हें वे जानते थे। दूसरे मसीही लोगों से प्रेम करने से पहले

हमें उन्हें पूरी तरह से जानने की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। जैसे ही हम भाइयों से मिलें या उनके बारे में सुनें, हमें चाहिए कि हम उनसे प्रेम करने लगें। हमें परमेश्वर के प्रेम के अनुसार अपने प्रेम का नमूना बनाना आवश्यक है।

स्वर्ग की उनकी आशा (1:5)

[5]उस आशा की हुई वस्तु के कारण जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में रखी हुई है, जिस का वर्णन तुम उस सुसमाचार के सत्य वचन में सुन चुके हो।

''उस आशा की हुई वस्तु के कारण जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में रखी हुई है'' (1:5)

टीकाकारों को पौलुस के **कारण** के उपयोग की समझ नहीं आती। लगता है कि इसका इस्तेमाल आशा को विश्वास और प्रेम का आधार बनाने के लिए किया गया है: ''पौलुस की भाषा हमें अपनी आशा को विश्वास और प्रेम के परिणाम के रूप में मानने से रोकती है, बल्कि इसके विपरीत है।''[10]

कुछ लोगों ने पौलुस के धन्यवाद को ही केवल आशा का आधार बनाने के लिए इस वचन के शब्दों को बदलकर उसे जिसे वे समस्या मानते हैं निकालने की इच्छा की है। ''विश्वास'' परमेश्वर के वचन के द्वारा हो सकता है (रोमियों 10:17; देखें यूहन्ना 17:20) और ''प्रेम'' परमेश्वर के प्रेम को स्वीकार करना हो सकता है (1 यूहन्ना 4:9)। ये गुण आशा पर आधारित भी हो सकते हैं। जलती हुई इमारत में फंसे लोग इस भरोसे के साथ कि जो लोग उन से प्रेम करते हैं वे उन्हें बचा लेंगे, प्रेम पर अपनी आशा बना सकते हैं। वे खतरे से उन्हें निकालने की अग्निशमन के कार्यकर्त्ताओं की योग्यता में भरोसा रखकर भी विश्वास पर अपनी आशा बना सकते हैं।

आशा (*elpis*), ''उम्मीद'' बड़े मसीही गुणों में से एक है। यह किसी की चाह रखना नहीं बल्कि विश्वास के ऊपर बनी पक्की उम्मीद और पूरा भरोसा है (इब्रानियों 11:1)। इस कारण आशा विश्वास का परिणाम है (गलातियों 5:5) जो परमेश्वर में और यीशु मसीह में रखा गया है (प्रेरितों 24:15; 1 थिस्सलुनीकियों 1:3; 1 तीमुथियुस 1:1; 1 पतरस 1:21)। विश्वास उस पर भी रखा जाता है जो पवित्र शास्त्र में लिखा और सुसमाचार में प्रकट की गई सच्चाइयों पर भी रखा जाता है (रोमियों 15:4; कुलुस्सियों 1:23)। मसीह का पुनरुत्थान हमें एक पुनरुत्थान की आशा देता है (प्रेरितों 23:6; 1 पतरस 1:3, 4)। सब मसीही लोगों में वही आशा है- उद्धार की एक और इकलौती आशा, जो अनन्त जीवन को सम्भव बनाएगी (कुलुस्सियों 1:5; 1 थिस्सलुनीकियों 5:8; तीतुस 1:2; 3:7)। परमेश्वर का अनुग्रह जो वह कृपा देता है, जिसे कमाया नहीं जा सकता आशा दे सकता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:16; 1 पतरस 1:13), और वह आशा जो उद्धार पाने और पवित्र जीवन जीने के लिए लोगों को प्रेरित कर सकती है (रोमियों 8:24; 1 यूहन्ना 3:3)। आशा आश्वासन देती है (इब्रानियों 6:11), जिसमें मसीही लोग आनन्द कर सकते हैं (रोमियों 5:2; 12:12)। ऐसी आशा के साथ कोई मसीह में अपने विश्वास से लज्जित नहीं होगा (रोमियों 1:16)। यह प्राण के लिए लंगर है (इब्रानियों 6:18, 19)।

यदि किसी बात पर आशा नहीं रखी जाती, तो अधिकतर इसे पाने के लिए प्रयास नहीं करते। परन्तु अपने आप में ही आशा मूल्यरहित है; आशा के साथ विश्वास जो ''प्रेम के द्वारा प्रभाव'' होना आवश्यक है (गलातियों 5:6)। विश्वास और प्रेम के ऊपर बनी आशा परमेश्वर के अनुग्रह पर आधारित है (1 पतरस 1:13)। विश्वास अनुग्रह तक ले जाता है जिस पर आशा बनी है।

मसीही लोगों के रूप में हमें वह मिलने की आशा है, जो हमारे पास है नहीं और अभी मिला नहीं है। यदि हमें यह पहले ही मिल गया होता तो हम इसकी आशा न रखते (रोमियों 8:24)। आशा परमेश्वर का गुण नहीं है, क्योंकि वह भविष्य को उतने ही पक्के तौर पर जानता है जितना मनुष्यजाति अतीत को जानती है। यहां बहुतायत के जीवन के आनन्द के अलावा (यूहन्ना 10:10), स्वर्ग की आशा मसीही लोगों को यीशु के लिए जीने के लिए प्रेरक बल है। वर्तमान जीवन मसीह के सेवकों द्वारा उम्मीद किए जाने वाले तेजस्वी जीवन का केवल एक पूर्व स्वाद है। वर्तमान की आशिषें केवल इससे कहीं अधिक आनन्ददायक भविष्य का आरम्भ हैं जिसकी हमें आशा है।

मसीही लोगों की आशा **स्वर्ग में रखी हुई** है। ''रखी हुई'' (*apokeimai*) का अर्थ है ''एक तरफ़ रखना'' (लूका 19:20), ''सम्भाल रखा'' या ''सुरक्षित रखा'' है। 2 तीमुथियुस 4:8 और इब्रानियों 9:27 में यही यूनानी शब्द मिलता है जहां इसका अनुवाद ''रखा हुआ'' और ''नियुक्त'' हुआ है। जो लोग मसीह के हैं स्वर्ग में उनका स्थान सुरक्षित है। ऐसा आश्वासन स्वर्ग की मसीही आशा देती है। पौलुस ने लिखा, ''पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है'' (फिलिप्पियों 3:20)। मसीही लोग स्वर्ग के नागरिक हैं। इसका अर्थ यह है पर हम एक विदेशी देश में बाहरी हैं, जिन्हें अपने घर से अलग किया गया है और अपने आस पास के लोगों जैसे नहीं हैं (1 पतरस 2:11)।

यूनानी शब्द *ouranoi* (मूल में, ''स्वर्गों,'' बहुवचन) नये नियम में बार-बार मिलता है और इसका अर्थ ''स्वर्ग'' है। कुलुस्सियों की स्वर्ग की आशा को उन्हें पौलुस द्वारा नहीं बताया गया था। उन्होंने पहले ही सुसमाचार को सुना हुआ था और उन में स्वर्ग की आशा बढ़ गई थी जो अधिक सम्भावना है कि इपफ्रास की शिक्षा से मिली थी।

बाइबल में ''स्वर्ग'' का इस्तेमाल तीन अर्थों में किया गया है। पहला स्वर्ग पृथ्वी के आस पास का वातावरण है, जहां बादल तैरते, धुआं उठता और हवाई जवाज और पक्षी उड़ते हैं (मत्ती 6:26; 8:20)। दूसरा स्वर्ग तारों और आकाश-गंगाओं वाला क्षेत्र है (मत्ती 24:29)। तीसरा स्वर्ग परमेश्वर का और स्वर्गदूतों की उसकी सेनाओं का निवास स्थान है (मत्ती 6:9; 18:10)।

मसीही व्यक्ति की आशा यीशु के साथ होने की है (यूहन्ना 14:3)। यह स्पष्टतया तीसरे स्वर्ग में होगी, जिसका उल्लेख 2 कुरिन्थियों 12:2 में है। स्वर्ग एक आत्मिक स्थान है, जहां मांस और लहू नहीं जा सकते, क्योंकि वहां पर जाने वाले लोग बदल जाएंगे (1 कुरिन्थियों 15:50-53)। स्वर्ग में रहने वालों की आत्मिक देहें होंगी (1 कुरिन्थियों 15:44), वे मसीह के जैसे (फिलिप्पियों 3:21) और परमेश्वर जैसे बन जाएंगे (1 यूहन्ना 3:2)। परमेश्वर आत्मा है (यूहन्ना 4:24), और आत्मिक जीवों के मांस और हड्डियां नहीं होतीं (लूका 24:39)।

भौतिक संसार के विपरीत जिसे देखा जा सकता है, यह अनन्तकालिक नहीं है, आत्मिक

अर्थात स्वर्गीय क्षेत्र को देखा नहीं जा सकता है और यह अनन्तकालिक है (2 कुरिन्थियों 4:18)। अपने आत्मिक स्वभाव के कारण स्वर्गीय क्षेत्र को भौतिक वस्तुओं के द्वारा ब्यान नहीं किया जा सकता परन्तु जो कुछ भौतिक है उससे केवल इसकी तुलना की जा सकती है। महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर के साथ स्वर्ग में रहने वालों को केवल आनन्द ही मिलेगा, क्योंकि स्वर्ग में शोक, रोना या मृत्यु नहीं होगी (प्रकाशितवाक्य 21:3, 4)। यह ऐसा स्थान है जो ''अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिए'' (1 पतरस 1:4)। कुलुस्से के लोगों को इस क्षेत्र में जाने की आशा थी और सब मसीही लोग वहां जाने की आशा कर सकते हैं।

पौलुस कुलुस्से के लोगों को मसीही जीवन का सही दृष्टिकोण देने की चाह कर रहा हो सकता है। उनकी आशा इस जीवन की आशिषों तक सीमित नहीं थी। इसके विपरीत इन भाइयों के पास दोनों संसारों की बेहतरीन चीज़ें थीं: वर्तमान में मसीह के साथ जीवन का आनन्द और जीवन उपरांत स्वर्ग में उसके साथ होने की आशा।

''जिस का वर्णन तुम उस सुसमाचार के सत्य वचन में सुन चुके हो'' (1:5)

''सत्य'' (*alētheia*) पूर्ण तथ्य, पूरी तरह से विश्वसनीय जानकारी को कहा गया है जो उसके विपरीत है जो झूठ और अविश्वसनीय है। **सत्य वचन** का सुसमाचार नये नियम की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। मत्ती और मरकुस ने यह नहीं लिखा कि यीशु ने ''सत्य'' शब्द का इस्तेमाल किया, बल्कि लूका ने उसे यह कहते हुए दोहराया, ''मैं तुम से *सच* कहता हूं कि एलिय्याह के दिनों में जब ... सारे देश में बड़ा अकाल पड़ा तो इस्राएल में बहुत सी विधवाएं थीं'' (लूका 4:25)। अपनी भूमिका में यूहन्ना ने जोड़ा कि यीशु सत्य का देने वाला है और जो लोग सत्य पर अमल करते हैं वे ज्योति के पास आते हैं (यूहन्ना 1:14, 17; 3:21)।

यीशु सत्य का देने वाला है (यूहन्ना 14:6; इफिसियों 4:21)। व्यवस्था वास्तविकता की छाया थी (इब्रानियों 10:1, 2), परन्तु यह वास्तविक देह नहीं थी (कुलुस्सियों 2:17)। मूसा के द्वारा व्यवस्था दी गई परन्तु यीशु के द्वारा अनुग्रह और सच्चाई दी गई। यीशु ने सत्य की गवाही दी (यूहन्ना 18:37) और सत्य की उसकी व्यक्तिगत शिक्षा यूहन्ना की शेष पुस्तक में है।

सत्य के महत्व को इस तथ्य में देखा जा सकता है कि परमेश्वर की आराधना सत्य के अनुसार होनी आवश्यक है (आयत 5ख; यूहन्ना 4:23, 24)। लोगों को सत्य के द्वारा पाप से मुक्त किया जाता है (यूहन्ना 8:32), और सत्य के द्वारा हृदय को शुद्ध किया जाता है (1 पतरस 1:22)। झूठ शैतान की ओर से आता है, क्योंकि उसमें कोई सत्य नहीं है (यूहन्ना 8:44)। आत्मिक सत्य केवल उसी में मिल सकता है जो सत्य के आत्मा, पवित्र आत्मा के द्वारा प्रकट किए गए के रूप में परमेश्वर के वचन में लिखा गया है। जो लोग यीशु की शिक्षा में बने रहते हैं वे सत्य को जान सकते हैं। कई झूठे शिक्षक संसार में निकल आए हैं (1 यूहन्ना 4:1) परन्तु मसीही लोग जिन पर परमेश्वर ने सत्य प्रकट किया है उन के वचनों के द्वारा उनकी शिक्षाओं को जांच सकते हैं (1 यूहन्ना 4:6)। परमेश्वर का न्याय सत्य के अनुसार होगा (रोमियों 2:2; KJV; NKJV; NIV)।

पौलुस द्वारा आयतें 5ख, 6, 9 और 23 में **सुना** का दोहराव अपने पाठकों को याद दिलाने के लिए था कि उनका विश्वास और आशा परमेश्वर के वचन के मौखिक सम्प्रेषण के द्वारा मिला

था। उनका विश्वास और आशा लिखित दस्तावेज़ों के आधार पर नहीं बल्कि उसी आधार पर था जो उन्होंने सुना था।

''सुसमाचार'' (1:5)

सुसमाचार के लिए यूनानी शब्द (*euangelion*) का अर्थ है ''अच्छी खबर।'' पौलुस के पत्रों में यह महत्वपूर्ण शब्द है, जो लगभग साठ बार मिलता है। सुसमाचार में यीशु की मृत्यु, दफ़नाए जाना और जी उठना शामिल हैं (1 कुरिन्थियों 15:1-4)। परन्तु एक वास्तविकता के रूप में अपनी मृत्यु, दफ़नाए जाने और जी उठने की खबर सुनाए जाने से पहले यीशु ने कहा कि सुसमाचार सुनाया जा चुका था (मत्ती 11:5)। उस समय जो ''अच्छी खबर'' सुनाई जा रही थी वह यह थी कि स्वर्ग का राज्य निकट है (मत्ती 4:17)। यह मसीह के राज्य का ''सुसमाचार'' था जो शीघ्र ही स्थापित होने वाला था (मत्ती 4:23; 9:35; मरकुस 1:14)। लूका ने *euangelizomai* शब्द के क्रिया रूप का इस्तेमाल किया जिसका अर्थ है ''सुसमाचार का प्रचार'' (लूका 4:18; देखें 3:18; 4:43); परन्तु उसने संज्ञा शब्द ''सुसमाचार'' का इस्तेमाल नहीं किया। यूहन्ना ने भी इसे शामिल नहीं किया; परन्तु ''सुसमाचार'' शायद सत्य के साथ मिलाया जाना चाहिए (देखें इफिसियों 1:13) जिसे यूहन्ना ने बार-बार इस्तेमाल किया।

वास्तव में सुसमाचार यीशु की मृत्यु, दफ़नाए जाने और जी उठने से अलग है। पौलुस ने लिखा कि कुलुस्से के लोगों ने ''सुसमाचार के सत्य वचन'' में स्वर्ग के बारे में सुना था। पौलुस ने पतरस का उसके मुंह पर सामना किया ताकि ''सुसमाचार की सच्चाई'' गलातियों के साथ मज़बूती से बन सके (गलातियों 2:5, 14)। पौलुस ने उसका विरोध इसलिए नहीं किया कि वह यीशु की मृत्यु, दफ़नाए जाने और जी उठने के ढंग को सही ढंग से नहीं मान रहा था। बल्कि इसलिए किया, क्योंकि उसने अन्यजाति मसीही लोगों से अपनी संगति तोड़ ली थी। ऐसा व्यवहार करके वह सुसमाचार की सच्चाई के अनुसार नहीं चल रहा था। सुसमाचार में मसीही लोगों के जीने का ढंग शामिल है (फिलिप्पियों 1:27), जिसमें पापपूर्ण व्यवहार से बचना शामिल है (1 तीमुथियुस 1:10, 11)। सुसमाचार वह सारी सच्चाई है, जिसे यीशु ने प्रकट किया है।

सुसमाचार का एक पहलू उद्धार पाने के लिए आरम्भिक शर्तें हैं। पौलुस ने कहा कि सुसमाचार ''उद्धार के निमित्त'' परमेश्वर की ''सामर्थ'' है (रोमियों 1:16) और इसे हर व्यक्ति को सुनाया जाना आवश्यक है (मरकुस 16:15)। जिन्होंने विश्वास करके इसे माना है और बपतिस्मा लेकर उद्धार पाएंगे (मरकुस 16:16)। यीशु उन से जो सुसमाचार को नहीं मानते, बदला देगा और उन्हें कभी न खत्म होने वाला दण्ड देगा (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9)।

उनके विश्वास से मिला फल (1:6)

[6]जो तुम्हारे पास पहुंचा है और जैसा जगत में भी फल लाता, और बढ़ता जाता है; अर्थात जिस दिन से तुम ने उस को सुना और सच्चाई से परमेश्वर का अनुग्रह पहिचाना है, तुम में भी ऐसा ही करता है।

''जो तुम्हारे पास पहुंचा'' (1:6)

मसीहियत मुख्यतया मसीही लोगों द्वारा सुसमाचार को सारे संसार में ले जाने से फैली है, न कि संसार के यीशु की शिक्षा लेने के लिए पास आने के द्वारा। इसका अर्थ यह है कि सुसमाचार को मानवीय तर्क के द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसके विपरीत यह इसलिए उपलब्ध है क्योंकि परमेश्वर ने इसे प्रकट किया है (गलातियों 1:10, 11)।

eis (''पास'') शब्द का इस्तेमाल करते हुए पौलुस ने लिखा कि सुसमाचार कुलुस्सियों के **पास पहुंचा** था। *eis* का मूल अर्थ ''में'' एक स्थान से किसी दूसरे स्थान में जाते हुए, एक दायरे से किसी दूसरे में जाते हुए और एक दिशा से किसी दूसरी दिशा में जाते हुए है। कार्य में हो या विचार में नये नियम में जहां भी *eis* मिलता है, उसे पीछे की ओर जाने के बजाय आगे की ओर जाना है। कुछ उदाहरणों पर ध्यान दें जिनका इस्तेमाल पौलुस ने कुलुस्सियों की पत्री में उनका इस्तेमाल कैसे किया: ''सब पवित्र लोगों *से*'' (1:4); ''सामर्थ'' (1:11); ''सहभागी'' (1:12); ''राज्य *में*'' (1:13); ''उसी के लिए'' (1:16); ''जिसके *लिए*'' (3:15); ''इस *लिए*'' (4:8)।

इसी शब्द का इस्तेमाल यीशु द्वारा किया गया। उसने कहा, ''क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित्त [*eis*] बहाया जाता है'' (मत्ती 26:28)। उसका लहू आगे की ओर देखते हुए, पापों की क्षमा के उद्देश्य से और इसे सम्भव बनाने के लिए बहा था न कि पीछे की ओर देखते हुए कि पाप पहले ही क्षमा हो चुके हैं। *Eis* मरकुस 1:4 लूका 3:3 में मेल खाते वाक्यांशों में भी मिलता है, ''पापों की क्षमा के लिए [*eis*]'' (लूका 24:47; प्रेरितों 2:38 भी देखें)। मन फिराव और बपतिस्मा पापों की क्षमा ''के लिए (*eis*) '' है। ये प्रत्युत्तर आगे की ओर देखते हैं और क्षमा पाने के उद्देश्य के लिए हैं; वे पीछे को उस क्षमा को नहीं देखते जो पहले ही मिल चुकी है। यीशु का लहू ही वह स्रोत है, उनके लिए जो मन फिराते और बपतिस्मा लेते हैं क्षमा उपलब्ध करवाता है।

कुलुस्सियों में पौलुस ने *eis* का इस्तेमाल 1:4, 6, 10, 11, 12, 13, 16, 20, 25, 29; 2:2, 5, 22; 3:9, 10, 15; 4:8, 11 जैसी कई आयतों में किया। ये सभी आयतें आगे की ओर देख रही हैं; इनमें से कोई भी पहले ही हो चुके किसी कार्य को पीछे की ओर नहीं देखती। कुछ लोग मत्ती 12:41ख को अपवाद के रूप में देखते हैं: ''उन्होंने योना का प्रचार सुनकर [*eis*] मन फिराया।'' यदि यह आयत अपवाद हो भी तो भी प्रेरितों 2:38 अपवाद नहीं बनेगा। यह तर्क दिया जाता है कि नीनवे के लोगों ने योना का प्रचार ग्रहण करने ''के लिए'' योना का प्रचार ''के कारण'' नीनवे के लोगों ने मन फिराया। *eis* आगे को देखने वाला है इस कारण इस आयत का अर्थ है कि उनके जीवन योना द्वारा प्रचार किए गए आत्मिक सुधार में आए थे। योना द्वारा अपने प्रचार में उन्हें दिखाई गई आत्मिक दिशा में जाकर उन्हें उसके प्रचार *eis* मन फिराने के रूप में बताया जा सकता है।

''जैसे जगत में भी फल लाता'' (1:6)

सुसमाचार केवल मसीही लोगों के लिए नहीं, बल्कि सारे **जगत** (*kosmos*) के लिए है। यही संदेश हर जगह सब लोगों के लिए है। संसार के उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना

सुसमाचार के प्रचार के द्वारा है (मरकुस 16:15, 16; रोमियों 1:16; 1 कुरिन्थियों 1:21; 1 पतरस 1:10-12)। उसकी और कोई योजना नहीं है। संसार तब तक सुसमाचार को सुनकर जान नहीं सकता, जब तक कोई इसे उनके पास लेकर न जाए (रोमियों 10:14-17)।

''सारे जगत'' वाक्यांश में ''सारे'' के पौलुस के इस्तेमाल का अर्थ आवश्यक नहीं कि पृथ्वी के कोने-कोने में हर जगह हो। पौलुस ने ''सारे'' का इस्तेमाल रोमी जगत के हर भाग के लिए किया (देखें रोमियों 1:8)। लूका ने लूका 2:1 में इसी प्रकार से ''सारे'' अभिव्यक्ति का इस्तेमाल किया। (NASB के कुछ मुद्रणों में ''सारे जगत के लोगों'' के नीचे टिप्पणी में ''रोमी साम्राज्य'' लिखकर सही किया गया है।)

सुसमाचार केवल पौलुस के द्वारा ही नहीं बल्कि कई प्रचारकों द्वारा संसार में ले जाया जा रहा था। प्रेरितों के काम की पुस्तक से पाठक को यह प्रभाव मिल सकता है कि इस्राएल देश के बाहर मिशन कार्य में केवल पौलुस ही लगा हुआ था। लूका ने पौलुस के मिशनरी कार्य को पुस्तक के अन्तिम भाग तक सीमित कर दिया, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि पौलुस अकेला अन्यजाति जगत में सुसमाचार सुना रहा था। और प्रचारक संसार के विभिन्न भागों में खुशखबरी को लेकर जा रहे थे (प्रेरितों 11:19)। पौलुस की बात कि सुसमाचार सारे जगत में सुनाया जा चुका था, इस बात का संकेत है कि उसके अलावा कई और लोग पूरे रोमी साम्राज्य में सुसमाचार सुनाने के काम में लगे हुए थे।

''अर्थात जिस दिन से तुम ने उस को सुना और सच्चाई से
परमेश्वर का अनुग्रह पहिचाना है, तुम में भी ऐसा ही करता है'' (1:6)

सुसमाचार को सुनाने और जीने का परिणाम लगातार **फल लाता जाता था।** यहां इस्तेमाल हुए यूनानी क्रिया रूप *karpophoroumenon* (जिसका अर्थ है ''फल लाना'') अपने आप में ऊर्जा का संकेत देता है।[11] यह विवरणात्मक शब्द सुसमाचार से उत्पादन की ज़बर्दस्त शक्ति का संकेत देता है। पौलुस ने सुसमाचार को ''उद्धार के नीमित परमेश्वर की सामर्थ'' कहा (रोमियों 1:16)।

बीज बोने वाले के दृष्टांत की यीशु की व्याख्या के अनुसार वचन की उत्पादकता को बढ़ाता है। इस दृष्टांत में यीशु ने एक खेत में बीज बोए जाने की बात कही। यीशु ने बताया कि ''बीज जो परमेश्वर का वचन है'' (लूका 8:11), ''राज्य का वचन'' (मत्ती 13:19) फल लाने के लिए बीज बोया जना आवश्यक है। यीशु ने कहा, ''जो बातें मैं ने तुम से कही हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी है'' (यूहन्ना 6:63)। ''बीज'' अर्थात सत्य के वचन के द्वारा आत्माओं को नया जन्म दिलाकर शुद्ध किया जाता और नये सिरे से पैदा किया जाता है (1 पतरस 1:22, 23)।

आत्मिक बीज की तरह ही शारीरिक बीज की उत्पादन देने में अपनी सीमाएं हैं। आत्मिक बीज के उपजाऊ बने रहने के लिए कुछ शर्तें आवश्यक हैं: (1) बीज में अपने आप में जीवन होना आवश्यक है। (2) किसी न किसी द्वारा बीज को बोया जाना आवश्यक है। (3) इसे अच्छी भूमि में लगाया जाना आवश्यक है। (4) इसका पालन पोषण किया जाना आवश्यक है। (5) बीज से उगने वाले पौधे के लिए और बीज देना आवश्यक है। यीशु का राज्य सारे संसार में इसी तरह से फैल सकता है। जो लोग वचन की आज्ञा मानते हैं वे दूसरों के साथ वचन साझा

करके फल ला सकते हैं। पिता, यीशु और पवित्र आत्मा ने बीज उपलब्ध करवा दिया है, परन्तु वे इसे बोते नहीं हैं। यीशु के अनुयायियों को बोने और पानी देने (1 कुरिन्थियों 3:6), बुआई करने और कटाई करने (यूहन्ना 4:35-38) की ज़िम्मेदारी दी गई है। पौलुस यह लिखते हुए कि ''परन्तु हमारे पास यह धन मिट्टी के बर्तनों में रखा है'' (2 कुरिन्थियों 4:7) इस विशेषाधिकार और जिम्मेदारी की बात कर रहा था।

पहली सदी के मसीही लोग, जहां भी गए वे अपने साथ वचन ले गए। इसी कारण लोग प्रतिदिन बदलते थे, जिससे कलीसिया तेज़ी से बढ़ और फैल रही थी। गिनती में बढ़ोतरी तब हुई जब लोगों ने ''सत्य का वचन सुना, जो सुसमाचार है'' (इफिसियों 1:13) जिसे उन्हें सुनाया गया था, ग्रहण किया।[12] मण्डलियां बढ़ने के अलग-अलग ढंग अपनाने की कोशिश कर सकती हैं, परन्तु बढ़ने के लिए परमेश्वर की योजना वचन के प्रचार के द्वारा ही होती है (प्रेरितों 8:4, 25; 18:11; 2 तीमुथियुस 4:2)। आरम्भिक कलीसिया ''फल लाती और बढ़ती जाती'' थी क्योंकि यह दूसरों के साथ लगातार परमेश्वर के वचन को साझा कर रही थी। कारसन ने लिखा है:

> परन्तु सुसमाचार केवल भीतर तक गहराई से ही काम नहीं करता बल्कि यह प्रभाव में भी लगातार बढ़ता जा रहा है। परमेश्वर के उपाय में ये दोनों बातें आपस में जुड़ी हुई हैं। दूसरों तक इसकी पहुंच आम तौर पर व्यक्तिगत रूप में लोगों में फल लाने के द्वारा होती है; और इस प्रकार से दूसरों के जीवनों पर सुसमाचार के प्रभाव में बढ़ने के द्वारा पवित्रता बढ़ती है।[13]

''फल'' में संख्या और आत्मिक दो अलग अलग किस्में हो सकती हैं। संख्या के फल का अर्थ वे लोग हैं जिन्हें मसीह के पास लाया जाता है (यूहन्ना 4:34-36; 12:24; 15:8, 16; रोमियों 1:13; फिलिप्पियों 1:22)। आत्मिक फल (या ''आत्मा के फल''; गलातियों 5:22, 23) भक्तिपूर्ण गुणों के बढ़ने को कहा गया है जो यीशु के नमूने से मिलते हैं। दोनों आपस में जुड़े हुए हैं। मसीह के पास लाए गए नमूनों के लिए उसमें पाए जाने वाले आवश्यक गुणों को बढ़ाने की इच्छा करना आवश्यक है। परिणाम मसीह के जैसे बनना और अपने आस-पास के लोगों तक पहुंचना होगा।

जो भी फल देता है वह अपनी नसल के अनुसार ही फल देता है (उत्पत्ति 1:11, 12)। यह नियम आत्मिक क्षेत्र के साथ-साथ भौतिक क्षेत्र में भी लागू होता है। परमेश्वर के राज्य का फल परमेश्वर का राज्य (मत्ती 13:19; लूका 8:11), अर्थात कलीसिया है। उसके वचन को बोने से केवल मसीही लोग अर्थात मसीह की कलीसिया के लोग ही निकलेंगे। सच्चाई का फल सच्चाई से उलट फल नहीं ला सकता। परमेश्वर का वचन मसीहियत की मांग की गई अलग अलग परछाइयां नहीं लग सकती। सुसमाचार का फल शिक्षा और जीने की शुद्धता में दिखाई गई मांगों से मेल खाता है। शुद्ध शिक्षा के अनुसार जीने से इससे जुड़े हुए लोगों में एकता आएगी (1 कुरिन्थियों 12:13; इफिसियों 4:4-6)।

दाखलता के डालियों के दृष्टांत में यीशु ने बताया था कि हर डाली जो उसमें बनी रहती है

फल लाएगी। यदि डाली फल नहीं लाती है तो उसे काटकर आग में फैंक दिया जाता है (यूहन्ना 15:1-6)। बहुत फल लाने वाली डालियां परमेश्वर की महिमा करती हैं (यूहन्ना 15:8)।

केवल अन्य कलीसियाएं ही फल नहीं दे रही और बढ़ रही थीं बल्कि कुलुस्से में मसीह के चेले भी यही कर रहे थे जैसा कि ''तुम में भी ऐसा ही करता है'' शब्दों से पता चलता है (1:6)। वे सुसमाचार की सच्चाई को बांट रहे थे और वही परिणाम दे रहे थे। मण्डली केवल तभी बढ़ सकती है यदि इसके लोग खोए हुओं को यीशु का वचन सिखा रहे हों। फसल की उम्मीद तभी की जा सकती है जब बीज बोया गया हो। जहां बीज नहीं बोया गया वहां खेत खाली रहता है, झाड़ियां उग जाती हैं, परन्तु अच्छी फसल नहीं होती।

जिस दिन से तुम ने उस को सुना और
सच्चाई से परमेश्वर का अनुग्रह पहिचाना है (1:6)

कुलुस्से में बीज बोया गया था। पौलुस ने कहा कि यह उसी दिन से फल ला रहा था **जिस दिन से** [कुलुस्सियों] **ने** [सुसमाचार] **को सुना और सच्चाई से परमेश्वर का अनुग्रह पहिचाना है।**

इन भाइयों ने सुसमाचार को तब तक बांटना आरम्भ नहीं किया जब तक उन्होंने इसे समझा नहीं। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार को समझना, उनके मसीही जीवनों में आरम्भ से ही था। मसीही जीवन का आरम्भ, जारी रहना और बने रहना उसके अनुग्रह पर निर्भर था। ''अनुग्रह'' की अवधारणा को ''अनुग्रह'' शब्द का इस्तेमाल किए बिना पापों की क्षमा के लिए क्रूस का प्रचार करके समझाई जा सकती है। उद्धार मानवीय गुण से अलग, पाप क्षमा करने की मसीह के लहू और उसके जी उठने (रोमियों 3:25; 10:9, 10) की सामर्थ को समझने पर आधारित है, यह अनुग्रह है।

सुसमाचार के विवरणों में केवल लूका ने यीशु को अपनी शिक्षा में ''अनुग्रह'' (*charis*) के यीशु के इस्तेमाल को लिखा है। उसने इसका अर्थ आभार के रूप में इस्तेमाल किया (लूका 6:32-34; 17:9), परन्तु कभी भी उस कृपा के रूप में नहीं जिसे कमाया न गया हो। *charis* मत्ती या मरकुस में नही मिलता बल्कि केवल यूहन्ना की भूमिका में मिलता है (1:14, 16, 17)।

प्रेरितों के काम पुस्तक में जिन लोगों के सुसमाचार प्रचार करने की बात लिखी गई है उन्होंने अपने प्रवचनों में कभी *charis* का इस्तेमाल नहीं किया परन्तु सुसमाचार के उनके प्रचार से सम्बन्धित संदर्भों में कई बार यह शब्द मिलता है:

- बरनबास ने यरूशलेम की कलीसिया द्वारा अन्ताकिया के मसीही लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए भेजे जाने पर वहां पहुंचकर भाइयों द्वारा ''परमेश्वर के अनुग्रह'' को देखकर आनन्द किया (प्रेरितों 11:22, 23)।
- अपनी पहली मिशनरी यात्रा के दौरान अन्ताकिया में रहते हुए पौलुस और बरनाबास ने मसीही लोगों को ''परमेश्वर के अनुग्रह'' में बने रहने के लिए समझाया (प्रेरितों 13:43)। इकुनियुम में परमेश्वर ने उनके हाथों चिह्न और अद्‌भुत काम कराकर ''अपने अनुग्रह के वचन'' पर गवाही दी (प्रेरितों 14:3)। अन्ताकिया की कलीसिया

द्वारा उन्हें ''परमेश्वर के अनुग्रह'' को सौंपा गया था (प्रेरितों 14:26)।

- पतरस ने कहा कि अन्यजातियों का उद्धार ''प्रभु यीशु के अनुग्रह'' के द्वारा उसी तरह हो रहा था जैसे यहूदियों का उद्धार हो रहा था (प्रेरितों 15:11)।
- पौलुस और सिलास को दूसरी मिशनरी यात्रा पर भेजने पर भाइयों ने उसे ''परमेश्वर के अनुग्रह'' को सौंप दिया (प्रेरितों 15:40)।
- अप्पुलोस ने उन लोगों की बहुत सहायता की जिन्होंने ''अनुग्रह'' के द्वारा विश्वास किया था (प्रेरितों 18:27)।
- पौलुस ने इफिसुस के प्राचीनों को बताया कि उसकी इच्छा थी कि ''परमेश्वर के अनुग्रह'' के सुसमाचार की गवाही संजीदगी से देने की अपनी सेवकाई को पूरा करे (प्रेरितों 20:24) और उन्हें ''उसके अनुग्रह'' को सौंप दिया (प्रेरितों 20:32)।

बेशक प्रेरितों के काम की पुस्तक में दर्ज किसी भी सरमन में ''अनुग्रह'' शब्द नहीं है, परन्तु उन में पाए जाने वाले संदेश में क्षमा, उद्धार और यीशु के द्वारा और उसके नाम में धर्मी ठहराया जाना होता ही था (प्रेरितों 3:19; 4:12; 10:43; 13:26, 39; 16:31, 32; 22:16)। इस कारण चाहे ''अनुग्रह'' लिखा नहीं गया परन्तु यीशु के द्वारा परमेश्वर की क्षमा का प्रचार जब भी किया जाता था इसका प्रचार भी होता था।

पौलुस ने कहा कि कुलुस्सियों ने इस अनुग्रह को ''पहचाना।'' ''पहचाना'' (*epiginōskō*) पूर्वसर्ग *epi* (''ऊपर'') और *gnosis* (''जानना'') का मेल है। यह शब्द किसी चीज़ को बौद्धिक रूप में जानने या समझने से कहीं बढ़कर है। इसका अर्थ शिक्षा और अनुभव के कारण पूरी तरह से जानना है। पौलुस एक पहचान की बात कर रहा था, जो एक मूल अवधारणा की पूरी समझ तक पहुंच गई थी। नये नियम में इस शब्द के रूपों को आम तौर पर आत्मिक समझ के लिए लागू किया जाता है (रोमियों 1:28; इफिसियों 1:17; 4:13; कुलुसियों 3:10; 1 तीमुथियुस 2:4)। कुलुस्से के लोगों ने मसीह के संदेश को सुनकर और उसे जीकर, इसकी ऊपर-ऊपर से जानकारी लेने के बजाय सुसमाचार के अर्थ को गहराई से समझ लिया था।

सुसमाचार को समझा जा सकता है। कुलुस्से के लोग इसका प्रमाण हैं। उन्होंने इसे सुना और समझा। पौलुस को उम्मीद थी कि जो उसने लिखा था इफिसुस के लोग उसे समझ लें। उसने उन्हें बताया, ''जिस से तुम पढ़कर जान सकते हो, कि मैं मसीह का वह भेद कहां तक समझता हूं'' (इफिसियों 3:4)। उसने कुरिन्थियों को आश्वासन दिया, ''हम तुम्हें और कुछ नहीं लिखते, केवल वह जो तुम पढ़ते मानते भी हो, और मुझे आशा है कि अन्त तक भी मानते रहोगे'' (2 कुरिन्थियों 1:13)।

यह कहने का कि उन्होंने ''सच्चाई से'' पहचाना था, पौलुस का अर्थ था कि उन्हें परमेश्वर के अनुग्रह का वास्तविक अर्थ समझ आ गया था और वे इसे जी रहे थे। अनुग्रह की उनकी बौद्धिक समझ के अलावा अब उन्हें अपने जीवनों में परमेश्वर के अनुग्रह की आशिषों की भी समझ थी। ''सच्चाई से'' केवल बाहरी दिखावे के बजाय, वे अनुग्रह के अर्थ को समझ चुके थे।

इपफ्रास की रिपोर्ट (1:7, 8)

[7]उसी की शिक्षा तुम ने हमारे प्रिय सहकर्मी इपफ्रास से पाई, जो हमारे लिए मसीह का विश्वासयोग्य सेवक है। [8]उसी ने तुम्हारे प्रेम को जो आत्मा में है हम पर प्रगट किया।

इपफ्रास वह दूत था जिसने कुलुस्सियों को सिखाया था। सत्य की इस भाई को समझ या तो पौलुस के द्वारा सिखाए जाने से या सीधे पवित्र आत्मा की ओर से सिखाए जाने से मिली थी। पवित्र आत्मा का दान इसे पौलुस के हाथ रखने के द्वारा दिया गया हो सकता है।

कुलुस्सियों को सुसमाचार के सत्य की **शिक्षा** उसी प्रकार मिली होगी, जैसे दूसरे सब लोगों को लेनी आवश्यक है। आरम्भ में इसका प्रसार विशेष रूप में प्रचार और शिक्षा के द्वारा हुआ। लिखित रूप में मिल जाने के बाद सत्य की शिक्षा पढ़कर भी ली जा सकती है (इफिसियों 3:3-5)।

कुलुस्सियों में पवित्र आत्मा ने प्रचार नहीं किया, न ही स्वर्गदूतों ने प्रचार किया (1 पतरस 1:10-12)। यीशु ने आत्मा के द्वारा प्रेरितों और नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं पर सत्य को प्रकट किया (यूहन्ना 14:26)। अन्तिम भोज के समय यीशु जब प्रेरितों के साथ था तो उसने उन्हें पवित्र आत्मा के द्वारा प्रकाशन देने का वचन दिया था। उस अवसर पर कही गई उसकी बातें विशेष रूप में उनकी थी: ''ये बातें मैं ने तुझ्हारे साथ रहते हुए तुम से कहीं'' (यूहन्ना 14:25); ''और तुम भी गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो'' (यूहन्ना 15:27); ''मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते'' (यूहन्ना 16:12)।

प्रेरितों और नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने सत्य के भण्डारों का काम किया, जिन में से सिखाने वाले जानकारी ले सकते थे। पौलुस ने तीमुथियुस को दूसरों को वही बातें सिखाने की ताड़ना की जो पौलुस ने उसे सिखाई थीं। ताकि वे दूसरों को भी वही बातें सिखा सकें (2 तीमुथियुस 2:2)। प्रेरित और भविष्यद्वक्ता कलीसिया की नींव थे (इफिसियों 2:20), और उन्होंने प्रभु की आज्ञाओं को लिखा (1 कुरिन्थियों 14:37)।

इपफ्रास नाम इपफ्रुदितुस का जो लातीनी नाम ''वेनुस्तुस'' (जिसका अर्थ है ''सुन्दर'' या ''बहुत'') से मेल खाता है, संक्षिप्त रूप है। पौलुस का एक लम्बे नाम वाला सहयात्री था, वह भाई जिसे फिलिप्पी में भेजा था (फिलिप्पियों 2:25; 4:18)। इपफ्रुदितुस को इस इपफ्रास से न उलझाया जाए, क्योंकि इपफ्रास कुलुस्से का रहने वाला था। इपफ्रास सम्भवतया कुलुस्से में सुसमाचार लेकर जाने वाला पहला व्यक्ति था। कुलुस्सियों और फिलेमोन के नाम पौलुस के पत्र लिखते समय शायद वह रोम में था। पौलुस को कुलुस्से, लौदीकिया, और हियरापुलिस की कलीसियाओं की स्थिति का पता इपफ्रास से मिला था। शायद उसने पौलुस के इफिसुस में प्रचार करते समय इन नगरों में प्रचार किया था (देखें प्रेरितों 19:10)। स्पष्टतया वह रोम में कलीसियाओं की स्थिति बताने के लिए और उसके कारावास में उसका साथ देने के लिए गया था।

पौलुस मसीह के लिए इपफ्रास के समर्पण और सेवा को बहुत मानता था। उसने उसे ''मसीह यीशु में मेरे साथ कैदी'' (फिलेमोन 23), ''हमारे प्रिय सहकर्मी इपफ्रास जो हमारे

लिए मसीह का विश्वासयोग्य सेवक है'' (कुलुस्सियों 1:7)। ''मसीह यीशु का दास'' कहा (कुलुस्सियों 4:12)। पौलुस ने अपने लिए कई बार ''दास'' शब्द का इस्तेमाल किया, परन्तु दूसरों के लिए केवल दो बार जिसमें इपफ्रास (4:12) और तीमुथियुस (फिलिप्पियों 1:1)।

''हमारे लिए मसीह का विश्वासयोग्य सेवक'' (1:7)

मसीही लोगों के लिए और अपने साथ काम करने वाले दूसरे लोगों के लिए पौलुस का प्रेम वही प्रेम था, जो उसने इपफ्रास के लिए दिखाया। अपने सहकर्मियों के सम्बन्ध में जिनमें इपैनितुस (रोमियों 16:5), अम्पलियातुस (रोमियों 16:8), इस्तखुस (रोमियों 16:9), पिरसिस (रोमियों 16:12), तीमुथियुस (1 कुरिन्थियों 4:17; 2 तीमुथियुस 1:2), तुखिकुस (कुलुस्सियों 4:7; इफिसियों 6:21), उनेसिमुस (कुलुस्सियों 4:9), लूका (कुलुस्सियों 4:14), और फिलेमोन (फिलेमोन 1) के सम्बन्ध में **प्रिय** (*agapētos*) शब्द का इस्तेमाल किया। विभिन्न मण्डलियों को लिखते हुए वह अक्सर उन्हें ''प्रिय'' कहता था। पौलुस चाहे अभी रोम में नहीं गया था फिर भी उसने रोम की कलीसिया को ''हे प्रियो'' कहकर पुकारा (रोमियों 12:19)। रोम के लोगों के नाम व्यक्तिगत सलाम भेजते हुए उसने संकेत दिया कि वह उस मण्डली के लोगों को जानता है, उसने कुलुस्से की कलीसिया के सम्बन्ध में ''प्रियो'' शब्द का इस्तेमाल नहीं किया, सम्भवतया इसलिए क्योंकि वह उन में से कइयों को व्यक्तिगत रूप में नहीं मिला था।

पौलुस के शब्दों में इपफ्रास एक **दास** सेवक (*sundoulos*) था जो *sun* (के साथ) *doulos* (दास) नामक दो शब्दों का मेल है। उसने पौलुस के साथ काम किया था जो अपने आपको मसीह का गुलाम यानी अपना नहीं, बल्कि यीशु का मानता था। उसने कुरिन्थियों को याद दिलाया था कि यह बात उन पर भी लागू होती है (1 कुरिन्थियों 6:19)। मसीह की कलीसिया के लोगों के रूप में उन्हें उसके लहू से खरीदा गया था (प्रेरितों 20:28)। पौलुस इपफ्रास को केवल यीशु का दास नहीं बल्कि एक **संगी** दास ही मानता था जिसके साथ वह यीशु की सेवा करता था।

यीशु ने अपने एक दृष्टांत में (मत्ती 18:28-33) और अपने द्वितीय आगमन की बात करते हुए (मत्ती 24:44)। एक गैर-धार्मिक अर्थ में **सह** सेवकों की बात की। यह अभिव्यक्ति केवल एक और बार पौलुस के लेखों में मिलती है, जो तुखिकुस के लिए इस्तेमाल हुई है।

''जो हमारे लिए मसीह का विश्वासयोग्य सेवक है'' (1:7)

पौलुस ने इपफ्रास को **विश्वासयोग्य सेवक** होने के रूप में वर्णित किया। ''विश्वासयोग्य'' (*pistos*) आम तौर पर लगातार सेवा में रहने वाले के लिए होता है चाहे लोगों की हो (मत्ती 24:45; 25:21; लूका 12:42) या परमेश्वर की (1 कुरिन्थियों 1:9)। किसी व्यक्ति के विश्वासयोग्य होने के लिए इस्तेमाल होने पर इस शब्द का अर्थ समर्पित सेवा हो जाता है। इसका अर्थ ''भरोसे योग्य कथन'' के रूप में विश्वसनीयता भी हो सकता है (1 तीमुथियुस 1:15; 3:1)। कई मामलों में परमेश्वर के विश्वासयोग्य होने के लिए इस्तेमाल होने पर कई मामलों में यह हवाला मसीही व्यक्ति के लिए इस्तेमाल होता है (उदाहरण के लिए देखें 1 तीमुथियुस 1:12)।

''सेवक'' शब्द ''बंदी सेवक'' के लिए इस्तेमाल होने वाले शब्द जिसका इस्तेमाल आयत 7ख में हुआ है, अलग है। यहां ''सेवक'' (*diakonos*) का अर्थ वह व्यक्ति है जो अधीनता से सेवा करता है। आम तौर पर इसका इस्तेमाल उनके लिए किया जाता है जो दूसरों की सेवा करते हैं (मत्ती 20:26; 23:11)– जैसे सेवक (मत्ती 22:13; यूहन्ना 2:5), सरकार (रोमियों 13:4), परमेश्वर की सेवा करने वाले (2 कुरिन्थियों 6:4), शैतान की सेवा करने वाले (2 कुरिन्थियों 11:15), और डीकनों के रूप में सेवा करने वाले (फिलिप्पियों 1:2; 1 तीमुथियुस 3:8, 12)। पौलुस ने अपने लिए इसी शब्द का इस्तेमाल किया (कुलुस्सियों 1:23), इस कारण कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि इपफ्रास डीकन के रूप में सेवा करता था या नहीं। ऐसे ही अर्थ वाला एक और यूनानी शब्द *diakonia* (अनुवाद ''सेवकाई'') डीकन के पद के लिए कभी इस्तेमाल नहीं हुआ (प्रेरितों 1:17; 6:4; रोमियों 12:7 भी देखें, जहां इस शब्द के रूपों का अनुवाद ''सेवा'' और ''सेवा करना'' हुआ)।

इपफ्रास मसीह के विश्वासयोग्य सेवक के रूप में पौलुस के काम में उसका समर्थन करता और उसकी सहायता करता था। पौलुस की सहायता करते हुए वह उन लोगों की भी सहायता करता था, जिनमें वह प्रचार करता था।

''जो हमारे लिए मसीह का विश्वासयोग्य सेवक है'' वाक्यांश में **हमारे** लिए के यूनानी शब्द (*hēmōn*) में एक विभिन्नता है। कुछ अनुवादों में जहां ''हमारी ओर से'' (NASB; NIB; NEB;TEV; ASV; RSV), जबकि अन्यों में humōn के अनुवाद के रूप में ''तुम्हारे लिए'' है (KJV; CEV)। *द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट* के सुधरे हुए चौथे संस्करण में *humōn* ''तुम्हारे'' का पक्ष लेता है।[14] अधिकार का वचन निर्णायक नहीं है इस कारण दोनों में से कोई एक स्वीकार किया जा सकता है। किसी भी अनुवाद से अर्थ में इतना फर्क नहीं पड़ता। यदि humōn को सही ढंग से पढ़ा जाए, तो इपफ्रास ने सुसमाचार फैलाने में पौलुस की सहायता की, जिससे पौलुस के काम को और उन लोगों को जिनमें उसने प्रचार किया लाभ मिला। यदि hēmōn सही है तो पौलुस यह संकेत दे रहा था कि कुलुस्सियों के लिए मसीह के दूत के रूप में इपफ्रास को पौलुस की पूरी स्वीकृति है।

''उसी ने तुम्हारे प्रेम को जो आत्मा में है हम पर प्रगट किया'' (1:8)

कुलुस्सियों को परमेश्वर के अनुग्रह का पता इपफ्रास से चला था। उसने उन्हें केवल सिखाया ही नहीं था, बल्कि उनके विषय में अच्छी रिपोर्ट भी लेकर आया था। पौलुस और तीमुथियुस को दी गई उसकी रिपोर्ट में कुलुस्सियों के प्रेम और आत्मिक उन्नति की बात की। केवल कुछ आयतें पहले (1:4), पौलुस ने सब पवित्र लोगों के लिए उनके प्रेम के लिए उन्हें सराहा था। अब उसने उस जानकारी का स्रोत इपफ्रास से मिली रिपोर्ट बताई।

कुलुस्सियों के **प्रेम** की बात करते हुए **जो आत्मा में है** क्या पौलुस के कहने का अर्थ पवित्र आत्मा से था? कई अनुवादकों ने आयत 8 में आत्मा के लिए अंग्रेज़ी बाइबलों में ''Spirit'' (*pneuma*) के लिए ''s'' बड़ा कर दिया है जिसका अर्थ यह है कि उनका मानना है कि पौलुस पवित्र आत्मा की बात कर रहा था। कुलुस्सियों 2:5 में यूनानी भाषा में जहां उपपद ''the'' का इस्तेमाल हुआ है,[15] पौलुस का आत्मा का हवाला माना जाता है। कुलुस्सियों में

केवल इन्हीं दो जगहों पर *pneuma* मिलता है। यदि आयत 8 में इसका अर्थ पवित्र आत्मा नहीं था तो पौलुस ने इस पत्र में पवित्र आत्मा का उल्लेख नहीं किया।

अपने पत्रों में पवित्र आत्मा की बात करते हुए यूनानी धर्मशास्त्र से पता चलता है कि पौलुस आम तौर पर ''आत्मा'' के साथ ''पवित्र'' को सुधार लेता था (रोमियों 5:5; 9:1) या ''आत्मा'' से पहले उपपद लगा देता था (रोमियों 2:29; 8:26, 27; गलातियों 3:2; 5:22)। परन्तु वह उपपद के इस्तेमाल में हमेशा एक समान नहीं रहता था (इफिसियों 3:5 और 4:4 में तुलना करें)। इस कारण अनुवादकों को यह निर्णय करना होगा कि उपपद का इस्तेमाल कब नहीं किया गया। विलियम हैंड्रिक्सन ने यह अवलोकन दिया है:

> चाहे ऐसे लोग हैं जिनका मानना है कि इसका [आयत 8 में] अर्थ केवल पवित्र आत्मा के किसी सम्बन्ध के बिना ''आत्मिक प्रेम'' है, यह विचार इस तथ्य के बावजूद पाया जाता है कि रोमियों 15:30; गलातियों 5:22; इफिसियों 3:16, 17 जैसी आयतों में मसीही प्रेम को निर्णायक ढंग से आत्मा के वास के फल के रूप में देखा जाता है।[16]

यदि आयत 8 में पौलुस के कहने का अर्थ पवित्र आत्मा था तो हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उसका मानना था कि कुलुस्से के लोग आत्मा के गुणों से मेल खा रहे थे। उन में प्रेम सहित, आत्मा का फल था (इफिसियों 5:9)।

यूनानी धर्मशास्त्र में ''आत्मा'' से पहले कोई उपपद नहीं मिलता, इस कारण पौलुस के कहने का अर्थ पवित्र आत्मा के बजाय ''आत्मा में'' (मानवीय आत्मा) हो सकता है। कई प्रसिद्ध अनुवादों में ''आत्मा में'' है जो अंग्रेज़ी में बड़े अक्षर में है। अन्यों ने ''आत्मा में प्रेम''[17] और ''तुम्हारा आत्मिक लगाव'' वाक्यांश अनुवाद किया है।[18]

यदि पौलुस के कहने का अर्थ ''आत्मा में'' था तो इसका अर्थ यूहन्ना 4:23, 24 के आराधना के संदर्भ में यीशु के ''आत्मा'' शब्द के जैसा ही है जहां कई अनुवादों में ''आत्मा में'' के लिए छोटा s लिखा गया है (KJV; NASB; NIV; NKJV; NRSV; RSV)। इसका अर्थ यह होगा कि उनका प्रेम केवल बाहरी दिखावा नहीं था बल्कि वह प्रेम था जो मानवीय आत्मा की गहराई में से निकला था। ऐसा शब्द उन के प्रेम की निष्कपटता का संकेत देता है।

प्रासंगिकता

धन्यवाद की प्रार्थना (1:3-6)

बहुत करके हमारी प्रार्थनाएं स्वार्थ से भरी होती हैं। हम उन आशिषों को मांगते रहते हैं जो परमेश्वर को धन्यवाद देने और दूसरों के लिए मांगने के बजाय हम अपने लिए आशिषें मांगते रहते हैं। यीशु की प्रार्थनाएं अपने लिए न होकर दूसरों के लिए अधिक होती थीं (लूका 22:31, 32; यूहन्ना 17:6-26; लूका 23:34)। पौलुस ने कुलुस्सियों को बताया कि वह उनके लिए धन्यवाद की प्रार्थना कर रहा है।

(1) *वह उनके विश्वास और प्रेम के लिए धन्यवादी था।* मसीही विश्वास अंधविश्वास

नहीं बल्कि प्रमाण पर आधारित विश्वास है। सारे संसार में डिज़ाइन का प्रमाण पाया जाता है जिसका अर्थ है कि उसे बनाने वाला है (भजन संहिता 19:1; रोमियों 1:19, 20; इब्रानियों 3:4)। परमेश्वर के होने में विश्वास के बिना कोई उसे प्रसन्न नहीं कर सकता। उद्धार विश्वास और अनुग्रह से मिलता है (इफिसियों 2:8, 9), क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह में हमारी पहुंच होती है (रोमियों 5:1, 2) यानी परमेश्वर की वह कृपा जिसे कमाया नहीं जा सकता।

उद्धार करने वाला विश्वास निष्क्रिय है; यह प्रेम के द्वारा कार्य करता है (गलातियों 5:6), क्योंकि बिना कर्मों के विश्वास मुर्दा है (याकूब 2:17, 26)। विश्वास को वचन के द्वारा पाला-पोसा और बढ़ाया जाता है (रोमियों 10:17)। अपने विश्वास को बढ़ाने के लिए हमें बिरिया के मसीही लोगों की तरह प्रतिदिन वचन को पढ़ना आवश्यक है (प्रेरितों 17:10, 11)। नव जन्मे हुए बच्चों की तरह दूध की लालसा करने के रूप में हमें पवित्र शास्त्र की इच्छा करनी आवश्यक है (1 पतरस 2:2) क्योंकि हम केवल शारीरिक भोजन से जीवित नहीं रह सकते। हमें परमेश्वर के वचन के आत्मिक भोजन की आवश्यकता है (मत्ती 4:4)।

हमारे विश्वास में मसीही गुण मिलाए जाते हैं, इन गुणों में प्रेम सबसे ऊपर है (2 पतरस 1:5-7)। उस कारण जो इसने हमारे लिए किया है प्रेम सबसे बड़ा गुण है। यह हमें परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए (यूहन्ना 14:15, 21, 23), मसीही स्वभाव को बढ़ाने के लिए (1 कुरिन्थियों 13:4-8) अपने पड़ोसियों और यहां तक कि अपने शत्रुओं के साथ सही सम्बन्ध बनाने के लिए प्रेरित करता है।

मसीही लोगों के लिए परमेश्वर (मत्ती 22:37), साथी मसीही लोगों (यूहन्ना 13:34), पड़ोसियों (मत्ती 22:39), और शत्रुओं (मत्ती 5:44) को प्रेम दिखाना आवश्यक है। दूसरों को यह दिखाने का ढंग कि हम मसीह के अनुयायी हैं मसीह में अपने भाइयों और बहनों के लिए गहरे और पक्के प्रेम के साथ होना आवश्यक है (यूहन्ना 13:35)। जब हम एक दूसरे में ऐसा प्रेम देखते हैं तो हमें धन्यवाद करना चाहिए।

(2) *वह उनकी आशा के लिए धन्यवादी था।* आशा प्राण का लंगर है (इब्रानियों 6:19)। जिस प्रकार से लंगर जहाज़ को थाम लेता है उसी प्रकार से आशा मसीही लोगों को यीशु से दूर बहकने से रोक लेती है। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने उस संदेश से जो उन्होंने सुना था अपने पाठकों को भटकने की चेतावनी दी (इब्रानियों 2:1-4)।

स्वर्ग हर मसीही की एक आशा है। नया जन्म हमें स्वर्ग की आशीष की आशा देता है (1 पतरस 1:3, 4)। यह परमेश्वर की बड़ी दया के कारण उसकी एक आशीष है जिसे यीशु के जी उठने के द्वारा दिखाया गया है। उद्धार उसके जी उठने के द्वारा दिया जाता है जब हम यीशु की मृत्यु, दफ़नाए जाने और जी उठने को बपतिस्मे में साझा करते हैं (1 पतरस 3:21)।

आशा जो मसीही लोगों को मिल सकती है वह यह है कि हम जी उठने के बाद सब स्वर्ग में इकट्ठा होंगे। उस समय यह वचन दिया गया है कि हम बदल जाएंगे (1 कुरिन्थियों 15:51, 52) अर्थात मसीह के आत्मिक स्वरूप में बदल जाएंगे (फिलिप्पियों 3:21; 1 यूहन्ना 3:2)। इस आशा का हमारे जीवनों पर लम्बा प्रभाव होना चाहिए।

(3) *वह उनके फल लाने के लिए भी धन्यवादी था।* मसीही लोगों का उद्धार दूसरों को उद्धार पाने में सहायता करने के लिए हुआ है। यीशु ने प्रेरितों को अनन्त जीवन के लिए आत्माओं

की कटाई करने के लिए खोए हुओं के खेतों को देखने के लिए कहा था (यूहन्ना 4:35, 36)। उसने कहा कि पके खेत तो बहुत हैं पर मज़दूर थोड़े हैं (मत्ती 9:37)।

जब मसीही लोग आत्मिक रूप में बढ़ते और दूसरों को मसीह के पास लाते हैं तो हमें आनन्दित होना चाहिए। भाइयों में जलन नहीं होनी चाहिए। यदि एक सदस्य किसी बात में दूसरों से अच्छा है तो सब को उसकी सफलता पर आनन्दित होना चाहिए (1 कुरिन्थियों 12:26)।

कुलुस्से की कलीसिया की कुछ समस्याएं पौलुस के सुनने में आई हैं। उसके उन पर ध्यान नहीं दिया; जिसके बजाय उसने विश्वास, प्रेम, आशा और फल लाने के भाइयों के सराहनीय गुणों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया।

दूसरे मसीही लोगों के लिए प्रार्थना करें (1:3-6)

लगभग हर मसीही हर समय इस बात से अनजान होता है कि अपनी प्रार्थनाओं में क्या शामिल करे, विशेषकर जब दूसरों के लिए प्रार्थना करनी हो। शायद अधिकतर बीमारी और व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए ही विनतियां की जाती है। पौलुस की प्रार्थनाओं से इस बात की समझ मिलती है कि दूसरों के लिए प्रार्थनाएं करते हुए इन बातों को शामिल किया जाना चाहिए।

पौलुस ने कुलुस्से के लोगों को बताया कि वह उनके लिए प्रार्थना कर रहा है (1:3)। उसने विशेष आत्मिक आशिषों के लिए भक्ति के गुणों में बढ़ने के लिए और व्यक्तिगत प्रार्थना की। सब मसीही लोगों को ऐसा ही करना चाहिए। मसीह में किसी भाई को मिलने वाले प्रोत्साहन की बात सोचें यदि कोई उससे कहे, ''जब मैं प्रार्थना करता हूं, तो मैं तुम्हारे विश्वास और प्रेम, उस आशा के लिए जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में रखी है, और तुम्हारे आत्मिक जीवन के लिए उसे धन्यवाद देता हूं।'' ऐसे आश्वासन से बंधन मज़बूत होगा और उस भाई को दिलेरी मिलेगी।

विश्वास हरकत में (1:4)

यीशु ने पूछा, ''जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो?'' (लूका 6:46)। उसे प्रभु के रूप में मानना काफी नहीं है। विश्वास व्यक्ति को उसकी इच्छा पूरी करने तक ले जाता है जिस पर वह भरोसा रखता है।

(1) *विश्वास के द्वारा प्रेरणा पाए दान।* इब्रानियों 11 अध्याय विश्वास के प्रेरणादायक स्वभाव के कई उदाहरण देता है: हाबिल ने ग्रहण योग्य बलिदान भेंट किया (आयत 4); नूह ने जहाज़ बनाया (आयत 7); अब्राहम ने परमेश्वर द्वारा प्रतिज्ञा किए हुए देश में जाने के लिए अपने घर को छोड़ दिया (आयत 8); इस्राएल ने यरीहो के गिर्द चक्र लगाए (आयत 30); और रहाब ने इस्राएलियों के जासूसों की सहायता की (आयत 31)। अब्राहम के कामों से उसका ''विश्वास सिद्ध हुआ'' (याकूब 2:22)। उसका विश्वास तब तक पूरा या ''सिद्ध हुआ'' नहीं था जब तक उसने काम नहीं किया। विश्वास एक शक्तिशाली प्रेरित है जो हमें परमेश्वर की इच्छा को मानने की प्रेरणा देता है।

(2) *जीवित विश्वास के चिह्न के रूप में काम करना।* याकूब ने लिखा कि बिना कर्मों के विश्वास मुर्दा और बेकार है (याकूब 2:17, 20, 24, 26)। कुत्ता मर भी जाए तो भी वह कुत्ता

ही है; परन्तु यदि वह मर गया तो वह काम नहीं करता। यही बात विश्वास पर लागू होती है। हरकत एक रोमांचित और जीवित विश्वास में ही है।

(3) *परमेश्वर के संदेश को मानने के रूप में काम करता है।* परमेश्वर किसी रहस्यमयी भावना या पवित्र आत्मा के सीधे कार्य के द्वारा मानवीय मन में सीधे विश्वास नहीं डालता। बाइबल बताती है कि विशवस परमेश्वर के संदेश को सही ढंग से मानने के द्वारा आता है: ''सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है'' (रोमियों 10:17)। विश्वास पैदा करने का परमेश्वर का योगदान उसके वचन का दान है। मनुष्य का योगदान वचन को ग्रहण करना है। यीशु के आश्चर्यकर्मों को इसलिए लिखा गया था कि लोगों को उनका पता चल सके और वे यीशु में विश्वास लाकर अनन्त जीवन पा सकें (यूहन्ना 20:30, 31)। सुसमाचार का प्रचार सुनने के बाद सामरियों और कुरिन्थियों ने विश्वास किया था (प्रेरितों 8:5, 12; 18:8)। यही बात इफिसुस के मसीही लोगों में भी थी जिन्होंने ''जब सत्य का वचन सुना'' (इफिसियों 1:13) तो विश्वास किया।

दूसरों को सिखाना (1:6)

कुलुस्से के लोग उसी समय दूसरे लोगों को सिखाने लग पड़े थे, जब उन्होंने इसे सुना था। नये विश्वासियों को सिखाया जाना, प्रशिक्षित किया जाना और अपने मित्रों को सिखाने के लिए प्रोत्साहित करना आवश्यक था।

पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा, ''जो बातें तू ने बहुत गवाहों के साम्हने मुझ से सुनी है, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों'' (2 तीमुथियुस 2:2)। उचित समय के बाद विश्वासी मसीही लोग जिनमें सिखाने की योग्यता थी और जो यीशु की शिक्षाओं के अपने ज्ञान में बढ़ गए और परिपक्व हो गए हैं, परमेश्वर के वचन के प्रभावी शिक्षक हो सकते हैं।

परमेश्वर सिखाने की क्षमता वाले लोगों से अपनी क्षमता को बढ़ाने की उम्मीद रखता है। भाइयों को मज़बूत करने के लिए ठोस शिक्षकों की कलीसिया को आवश्यकता है (इफिसियों 4:11, 12), और संसार को यीशु मसीह के द्वारा उद्धार की खुशखबरी सुनाने के लिए सुसमाचार के प्रचारकों की आवश्यकता है (रोमियों 10:14, 15)। परमेश्वर करे कि हम पहली सदी के मसीही लोगों द्वारा ठहराए गए नमूने के अनुसार दूसरों को सिखाना जारी रखें!

टिप्पणियां

[1]रोमियों 1:8; 1 कुरिन्थियों 1:4; इफिसियों 1:16, 17; फिलिप्पियों 1:3; कुलुस्सियों 1:3; 1 थिस्सलुनीकियों 1:2; 2 थिस्सलुनीकियों 1:3; 2 तीमुथियुस 1:3; फिलेमोन 4. [2]देखें रोमियों 1:10; 10:1; 2 कुरिन्थियों 13:7, 9; इफिसियों 1:16; फिलिप्पियों 1:4, 9; फिलेमोन 4; 1 थिस्सलुनीकियों 1:2; 2 थिस्सलुनीकियों 1:11; 2 तीमुथियुस 1:3. [3]रॉबर्ट जी. ब्रेचर एंड यूजीन ए. निडा, *ए ट्रांसलेटरस हैंडबुक ऑन पॉल'स लैटर्स टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन,* हैल्पस फार द ट्रांसलेटर्स (न्यू यॉर्क: यूनाइटड बाइबल सोसायटीस, 1977), 8. [4]देखें रोमियों 5:2-5; 1 कुरिन्थियों 13:13; गलातियों 5:5, 6; इफिसियों 4:2-5; 1 थिस्सलुनीकियों 1:3; 5:8; इब्रानियों 6:10-12; 10:22-24; 1 पतरस 1:3-8, 21. इस सलाम में पौलुस द्वारा इस्तेमाल किए गए और मुख्य शब्द हैं

''सुसमाचार,'' ''सत्य,'' और ''अनुग्रह'' (कुलुस्सियों 1:5ख, 6)। [5]जे. बी. लाइटफुट, *सेंट पॉल'स एपिस्टल्स टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन,* संशो. (लंदन: मैकमिलन एंड कं., 1916), 130. [6]हर्बर्ट ए. करसन, *द एपिस्टिल ऑफ़ पॉल टू द कोलोसियंस एंड फिलेमोन: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960), 30. [7]लाइटफुट, 131. [8]ई. के. सिंपसन एंड एफ. एफ. ब्रूस, *कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द इफिसियंस एंड द कोलोसियंस,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1957), 180. [9]ए. टी. रॉबर्टसन, *ए ग्रामर ऑफ़ द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट इन द लाइट ऑफ़ हिस्टोरिकल रिसर्च* (नैशविल्ल: ब्रॉडमैन प्रैस, 1934), 27. [10]आर. सी. लुकास, *द मैसेज ऑफ़ कोलोसियंस एंड फिलेमोन* (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1980), 29.

[11]लाइटफुट 133. [12]प्रेरितों 2:41; 4:4; 6:7; 8:14; 11:1; 12:24; 17:11; 19:20. [13]कार्सन 33. [14]*द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट* चौथा संशो. संस्क., संपा. बारबारा एलैंड, कर्ट एलैंड, जॉनेस, करविदोपौलुस, कार्लो, एम. मार्टिनी एंड ब्रूस एम. मैजगर (स्टगर्ट: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीज़, 1998)। [15]NASB में कुलुस्सियों 2:5 ''in spirit'' अनुवाद हुआ है जबकि KJV में ''in the spirit'' है। [16]विलियम हैंड्रिक्सन, *एक्सपोज़िशन ऑफ़ कोलोसियंस एंड फिलेमोन,* न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1964), 54. [17]एलेक्जेंडर कैम्बेल, जॉर्ज कैम्बेल, जेम्स मैकनाइट एंड फिलिप डॉडरिज, *द सेक्रेड राइटिंग ऑफ अपोस्टल्स एंड इवैंजलिस्ट्स ऑफ़ जीज़स क्राइस्ट: कॉमनली स्टाइल्ड द न्यू टैस्टामैंट* (बफेलो, वर्जिनिया: ए कैम्बेल, 1826; रिप्रिंट, नैशविल्ल: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1974), 359; और *द वर्ड द बाइबल फ्रॉम 26 ट्रांसलेशंस* सपा. क्रटिस वॉन (गुल्फपोर्ट, मिसिसिप्पी: मैथिस पब्लिशर्स, 1991), 2394 में जे. बी. रोदरम, *द एम्फसाइड न्यू टैस्टामैंट: ए न्यू ट्रांसलेश।* [18]हग जे. शॉनफील्ड, *द अथेंटिक न्यू टैस्टामैंट* (न्यू यॉर्क: न्यू अमेरिकन लाइब्रेरी ऑफ लिटरेचर, 1954), 331.